कला दीर्घा
KALA DIRGHA

April 2013, Volume-13, No. 26

कला दीर्घा
KALA DIRGHA

दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अप्रैल 2013, वर्ष 13, अंक 26
International Journal of Visual Art, April 2013, Vol. 13, No. 26
Website : www.kaladirgha.com
ISSN : 0976 - 1500

जयन्ती राबड़िया की कलाकृति
Art of Jayanti Rabadia

सम्पादक
डॉ. अवधेश मिश्र
C-361, राजाजीपुरम्,
लखनऊ–226 017

Editor
Dr. Awadhesh Misra
C-361, Rajajipuram,
Lucknow-226 017, India

✆ +91-94150 22724
Email : drawadheshmisra@gmail.com
website : www.awadhesharts.com

सह–संपादक
डॉ. लीना मिश्र
Co-Editor
Dr. Leena Misra

सहायक संपादक
श्रुति सेठ
Assistant Editor
Shruti Seth

प्रतिनिधि
Representative

हेमराज, दिल्ली
Hemraj, Delhi
✆ +91-98111 32871 Email : rajhemraj@rediffmail.com

राकेश माथुर, यू.के.
Rakesh Mathur, U.K.
✆ 0044-20-83256358 Email : mathurRak@aol.com

सांग, इन–सैंग, कोरिया
Song, In-Sang, Korea
✆ 082-10-6228-333 Email : songjayu@gmail.com

स्मिता नारायण, यू.एस.
Smita Narayan, U.S.
✆ +0019728413381 Email : drawadheshmisra@gmail.com

कानूनी सलाहकार
Legal Advisor

ए.पी. ओझा एडवोकेट
A.P. Ojha Advocate
✆+91-98390 10677 Email : apojhaadvocate@ymail.com

मुद्रक
अर्चना एडवरटाइजिंग प्रा.लि.
नई दिल्ली
Printed at
Archana Advertising Pvt. Ltd.
New Delhi

प्रकाशक एवं वितरक
अंजू सिन्हा
1/95, विनीत खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ-10
Publisher & Distributor
Anju Sinha
1/95, Vineet Khand,
Gomti Nagar, Lucknow-10 INDIA
✆ +91-522-2725942 Email : anju1965@yahoo.com

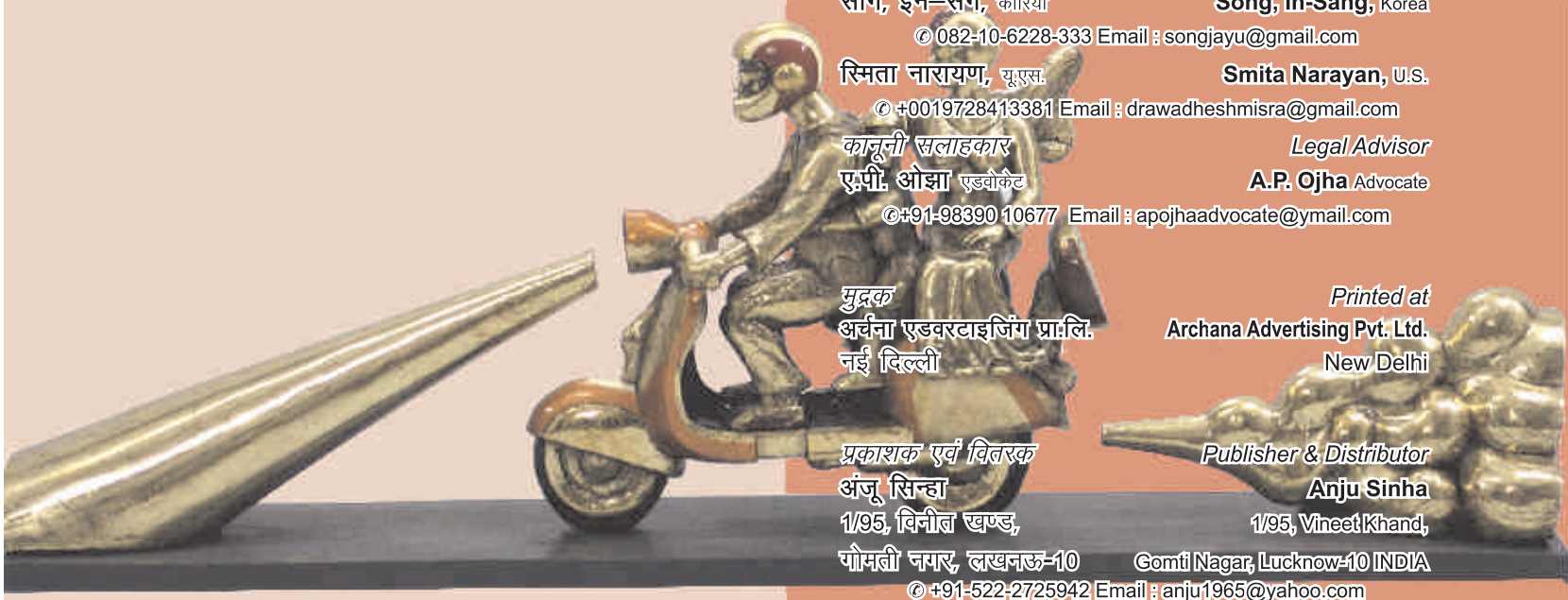

आवरण चित्र–पंकज पँवार की कलाकृति
Cover - Sculpture of Pankaj Panwar

Price : ₹ **150/- US $ 10; UK £ 6,** for institutions-₹ **250/-** in India

SUBSCRIPTION

For Individuals :

3 years	UK £ 36	US $ 60	Rs. 900	(Six copies)
5 years	UK £ 60	US $ 100	Rs. 1400	(Ten copies)

For Instutitions :

3 years	UK £ 36	US $ 60	Rs. 1500	(Six copies)
5 years	UK £ 60	US $ 100	Rs. 2500	(Ten copies)

For membership please send subscription by DD in favour of **Kala Dirgha** payable at Lucknow

सम्पादन अवैतनिक ***Honorary Editor***

प्रकाशित सामग्री के लिये सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी विवाद के लिये न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा। प्रकाशित सामग्री के किसी अंश का पुनर्प्रकाशन वर्जित है।

The editor is not responsible for the published articles. For any legal dispute the matter will be in the jurisdiction of the Lucknow Courts. Reproduction in any form is prohibited.

सम्पादकीय 4

अशोक भौमिक 6
भारतीय कला और आज का कला बाज़ार

अवधेश अमन 17
आकारों की सम्प्रेषणीयता

डॉ. राजेश कुमार व्यास 19
कहे-सुने के दृश्य आख्यान

भुनेश्वर भास्कर 24
माधवी पारेख की कला

आर.बी. गौतम 29
आंतरिक संवेग का प्रतिफलन

डॉ. नीरू 31
आध्यात्मक से उपजी संवेदनाओं के चित्र : राजश्री ठक्कर

डॉ. अरूणा व्यास 34
प्रकृति चित्रों का सांगीतिक चितराम

नितीश चन्द्र शर्मा 37
वृंदावन सोलंकी : देशज विषयों का चितेरा

विनोद भारद्वाज 41
कबीरपंथी अमूर्तन की एक अलग दुनिया

कुमार अनुपम 45
अभिशप्त इच्छाओं के ईहामृग

डॉ. राजेश कुमार व्यास 48
कलास्वाद का मर्म

Dr. Ashrafi S. Bhagat 51
K.G. Subramanyan : The Versatile Genius

Anthony Smith Jr. 53
Rathin Kanji : Responds to The Post-Post Modern...

Dr. Meghali Goswami 56
Nirmalendu Das : An Alchemist in the World of Print Making

Abhijeet Gondkar 60
New Sensibilities, New Ends, New Codes : Satish Wavare

Prashant Daw 62
Symphony of Music : Anita Roy Chowdhury

Dr. Manisha Patil 64
My City, My Life : Pandurang Tathe

Bhoomika Jain 67
The Multifaceted Artist : Rajesh Mehra

Mili Mukherjee 71
Soul-Rendering Modernist : DK Roy Chowdhury

Donald Kuspit 74
The Huddled Masses : Iranna's Protest Art

Dr. Ashrafi S. Bhagat 78
Threads of Tradition : In Memory of Suriyamoorthy

Koumudi Malladi 81
Confluence

Koumudi Malladi 85
India Art Fair : An Experience

कला दीर्घा
KALA DIRGHA

दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अप्रैल 2013, वर्ष 13, अंक 26
International Journal of Visual Art, April 2013, Vol. 13, No. 26
website : www.kaladirgha.com

जी.आर. इरन्ना की कलाकृति
Sculpture of G.R. Iranna

के.जी. सुब्रमण्यन की कलाकृति
Painting of K.G. Subramanyan

सम्पादकीय

देखा जाय तो भारतीय समकालीन कला एक 'वर्ग विशेष' की बनकर रह गई है। वही वर्ग उसका निवेशक, संग्राहक, दर्शक, क्रेता-विक्रेता, दिशा-दशा तय करने वाला एवं अनेक प्रकार का घोषित-अघोषित अधिकारी है। इस वर्ग से मुक्त कर कला को जनोन्मुख या लोकाश्रयी बनाने का जो महत्त्वपूर्ण कार्य कला समीक्षक कर सकते थे/ करना चाहिए था उन्होंने अपनी पूरी जिम्मेदारी नहीं निभायी। कला को इतना जटिल/बोझिल बनाकर प्रस्तुत किया गया कि आम आदमी उससे कट गया और कभी कभी तो ऐसी कहानियों, रहस्यों, मिथकों का आडम्बर तैयार किया गया कि उसे अनुभूत करने की बजाय लोग कला का अर्थ खोजने लगे। यह कहते सुना जाने लगा कि 'यह हम लोगों की समझ के ऊपर है' या 'इतना महँगा चित्र है तो अवश्य इसके पीछे कोई गूढ़ रहस्य होगा।' कला के मूल्यहीन प्रयोगों से यह भ्रम अधिक फैला भी। इधर न्यू मीडिया के अनेक काम, इंस्टालेशन आदि की ऐसी बाढ़ आई कि गंभीर कला कर्म पीछे चला गया। कुछ कलाकार और वीथिकाएँ रातोंरात मालामाल हुईं। ऐसे समय पर समीक्षकों की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण थी पर बाज़ार की चकाचौंध में वे भी भ्रमित नज़र आए या उसका हिस्सा बन गए। अपनी मुख्य भूमिका से विरत हो अनेक समीक्षक तो 'क्यूरेटर' बन गए जो एक समूह विशेष को प्रोमोट करने में ही अपनी समस्त ऊर्जा लगाने लगे। हालाँकि यह कार्य उनके सुनियोजित क्रिया-कलाप का ही हिस्सा है और पृष्ठभूमि में मोटा लाभांश रहता है। कुछेक समीक्षकों की तो अपनी शर्तें होती हैं। (जिनमें कृतियों को उपहार में लेने से लेकर मोटा पैसा लेना या विशेष प्रकार की मेहमान नवाजी शामिल है) जिसे पूरा करके किसी भी कलाकार या कला पर लिखवाया/छपवाया जा सकता है। इसमें कला की गुणवत्ता या स्तर कहीं बाधक नहीं बनता।

आज कला समीक्षा के मानक क्यों मूल्यविहीन हो गए हैं; सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्य क्यों गौण हो गए हैं? समीक्षक-'क्यूरेटर', 'इन्वेस्टमेंट कन्सल्टेंट', 'व्यावसायिक वीथिकाओं के धन/सुविधा भोगी कार्यकर्ता' तक ही सिमटकर क्यों रह जा रहे हैं? आज कला में शोधपरक कार्य, डाक्यूमेंटेशन, कला की विधाओं-प्रवृत्तियों-नए आयामों या संभावनाओं पर अपेक्षाकृत कम लिखा जा रहा है बजाय कलाकार विशेष को फीचर कर उसके रेट बढ़ाने जैसे एक सुनियोजित क्रिया-कलाप के।

इधर पत्र-पत्रिकाओं पर इलेक्ट्रानिक मीडिया में भी कला-संस्कृति के लिए स्थान नहीं रह गया है। हिन्दी मीडिया में तो हाल और भी दयनीय है जहाँ कला-समीक्षा या तो प्रदर्शनियों की रिपोर्टिंग तक सीमित है अथवा कलाकार की जीवनी लिखने

अवधेश मिश्र, संयोजन १/२०१३, कैनवस पर तैलचित्र, ६०x१२० सेमी.
Awadhesh Misra, Composition, 1/2013, Oil on canvas, 90x120 cm.

तक। कला की दशा-दिशा, भविष्य- संभावनाओं, प्रवृत्तियों -स्थानीयता- वैश्विकता-सौंदर्य मूल्यों पर चिन्तन आदि पर विचार-विमर्श कर स्वस्थ सांस्कृतिक वातावरण बनाने की जिम्मेदारी से हम सब अपने को अलग कर चुके हैं। यहाँ तक कि आज हिन्दी समीक्षा के लिए समृद्ध शब्दावली का भी अभाव है। इस दिशा में कोई गंभीर काम भी नहीं हो पा रहा है क्योंकि जो वर्ग कला का खरीददार है उसका सम्बन्ध हिन्दी भाषा से नहीं है। व्यावसायिक वीथिकाओं द्वारा लक्ष्य किए गए कलाकार भी इस तरह तैयार किए जा रहे हैं कि प्रदर्शनी में कृतियाँ कम और कलाकार अधिक बोले। वह इस लोक से विचित्र लोक तक की कहानियाँ अपनी कृतियों से जोड़कर अपने वाक्जाल में क्रेता को कैसे फँसा सके।

इस तरह कला में बाजार के दुष्परिणामों और विकृतियों की विस्तृत चर्चा करते हुए वरिष्ठ कलाकार, समीक्षक एवं उपन्यासकार अशोक भौमिक का अपने आलेख 'भारतीय कला और आज का कला बाजार' में बाज़ार के अनेक रूपों का रेखा-चित्रण किया है जो इस अंक में प्रस्तुत किया जा रहा है। उन्होंने प्राथमिक स्तर से शिक्षा और व्यक्तित्व में कला-शिक्षा की भूमिका का जिक्र करते हुए कैसे उसे समाजोन्मुखी बनाया जाय साथ ही आज सांस्कृतिक मूल्य विहीन प्रयोगों को किस कला की संज्ञा देकर एक भ्रम पैदा किया जा रहा है, इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से लेकर समकालीन परिदृश्य तक सोदाहरण प्रस्तुत किया है, जो ध्यातव्य है।

इस अंक में लम्बी कलायात्रा कर चुके गोपी गजवानी (अवधेश अमन), जयन्ती रावडिया (डॉ. राजेश कुमार व्यास), माधवी पारेख (भूनेश्वर भास्कर), जयश्री चक्रवर्ती (आर.बी. गौतम), राजश्री ठक्कर (डॉ. नीरू), महेश चन्द्र शर्मा (डॉ. अरूणा व्यास), वृन्दावन सोलंकी (नितीश शर्मा), श्रीधर अय्यर (विनोद भारद्वाज), पंकज पवार (कुमार अनुपम), के.जी. सुब्रमण्यन (डॉ. अशर्फी एस. भगत), रथिन कांजी (एन्थनी स्मिथ), निर्मलेन्दु दास (डॉ. मेघाली गोस्वामी) सतीश बावरे (अभिजीत गोंडकर), अनीता राय चौधरी (प्रशान्त दॉ), पांडुरंग टाथे (डॉ. मनीषा पाटिल), राजेश मेहरा (भूमिका जैन), डी.के. रॉय चौधरी (मिली मुखर्जी) एवं जी.आर. इरन्ना (डोनाल्ड कस्पिट) पर प्रख्यात कला समीक्षकों ने अनेक अनछुए पहलुओं को सामने लाते हुए आलेख/साक्षात्कार प्रस्तुत किया है साथ ही कला का एक विशाल आयोजन 'इंडिया आर्ट फेयर' एवं हैदराबाद के कलाकारों की एक उल्लेखनीय प्रदर्शनी पर कौमुदी मल्लाडी ने विस्तृत रिपोर्ट लिखी है।

विगत् दिनों वरिष्ठ कलाकार एम. सूर्यमूर्ति हमारे बीच नहीं रहे, उन पर कला दीर्घा परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि स्वरूप अशर्फी एस. भगत द्वारा लिखा गया उनका यशावलोकन प्रस्तुत किया जा रहा है, साथ ही अभी हाल में हमारा साथ छोड़ गए गणेश पाइन के कला अवदान को स्मरण करते हुए कला जगत की ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि।

– डॉ. अवधेश मिश्र

गणेश पाइन की कलाकृति
Painting of Ganesh Pyne

गोपी गजवानी की कलाकृति
Painting of Gopi Gajwani